



# बालक को विनयवान एवं गुणवान बनाने के लिए

## **JAINISM WITH ART**

### कला द्वारा संस्कार सिंचन



अनुयोगाचार्य श्री नयचंद्रसागरजी म.सा.के शिष्य  
मुनि श्री सुमतिचंद्र सागरजी म.सा.





# जीवन में कौन हमें क्या सिखाता है ?



## What we learn from others...

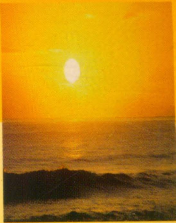


साधु भगवंत पाप से डरना सिखाते हैं ।

**A monk teaches us to be fearful of sins**

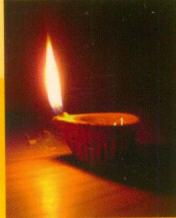
सूर्य नियमित बनना सिखाता है ।

**The sun teaches us to be punctual.**



कुत्ता वफादार बनना सिखाता है ।

**A dog teaches us to be faithful**



दिपक अंधेरा दूर करना सिखाता है ।

**A lamp shows us how to abdisch darkness**



गुलाब दुःख में भी हसते रहना सिखाता है ।

**A rose teaches us to keep smiling even though we feel gloomy.**



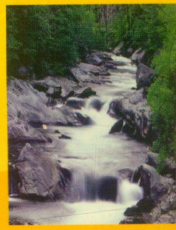
घड़ी हमेशा कार्य में रत रहना सिखाती है ।

**A clock teaches ut to always remain engrossed in work**



चंदन स्वयं घीस कर दूसरो को सुगंध देना सिखाता है ।

**Sandal wood teaches us to spread fragrance even though it gets rubbed.**



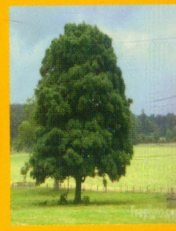
नदी उदार बनना सिखाती है ।

**A river teaches us to be generous.**



अगरबत्ती स्वयं जल के भी सुगंधदेना सिखाती है ।

**An incense stick itself burns but teaches us to spread fragrance**



वृक्ष सब सहन करना सिखाता है ।

**A tree teaches us to be tolerant.**



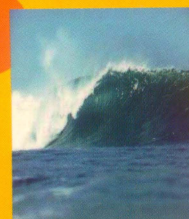
पृथ्वी विशाल बनना सिखाती है ।

**The earth teaches us to be vast.**



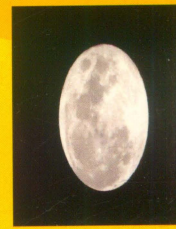
सिंह नीडर बनना सिखाता है ।

**A lion teaches us to be fearless.**



समुद्र जीवन में गंभीर बनना सिखाता है ।

**The sea teaches us to be serious.**



चंद्र शीतल, गुस्सा नहीं करना सिखाता है ।

**The moon teaches us to be soothing (not to get angry) with others.**



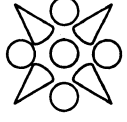
पर्वत हमें धीर (अडग) बनना सिखाता है ।

**A mountain teaches us to be firm.**



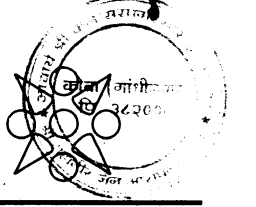


# बालक को विनयवान एवं गुणवान बनाने के लिए



## JAINISM WITH ART

### कला द्वारा संस्कार सिंचन



Year 1st

Edition 3rd

(Continuous edition 3rd)



पृथ्वी सुरक्षानो शाधार  
मूलनी सलामतीमां छे तेम  
गुणनी सुरक्षानो शाधार  
संस्कारनी सलामतीमां छे  
जात्य अवस्थामां पडेल संस्कारो  
समग्र गुणने सुप्रसन्न जनोपदे  
ऐना लक्ष्य साथे शाली रहूदी  
जात्य संस्कार श्रेणी गुं त्रिगुं सरण  
तमारी सामे शादी रहूं छे.  
तमारुं गुण संस्कार-सहायारमय जन  
तेम शुभ शाशी!

*नयचंद्रसागरजी*

-: प्रेरणा :-

वर्धमान तपोनिधि, शासन प्रभावक  
अनुयोगाचार्य श्री नयचंद्रसागरजी म.सा.

-: मार्गदर्शक :-

मुनि श्री ऋषभचंद्रसागरजी म.सा.

-: संयोजक :-

मुनि श्री सुमतिचंद्रसागरजी म.सा.

-: प्रकाशन :-

पूर्णानंद प्रकाशन

सूचना:

किसी को भी इन पुस्तको की पभावना करनी हो या नये सदस्य बनना हो तो नीचे दीए गए एड्रेस पर संपर्क करे। १ से ४ अंक की परीक्षा ली जायेगी इसलिए पुस्तक संभालकर रखे।

Instruction :- An Exam will conducted regarding 1 to 4 Edition joining so please keep this book saftely.

#### महाराष्ट्र विभाग

मुलुंड - भूपेन्द्रभाई	98202 93269
बोरिवली - धरणेन्द्रभाई	98925 51590
मलाड - दिपकभाई	98202 44742
घाटकोपर - रुपेशभाई	93222 31001
मादुंगा - रसीलाबेन	97274 05993
डोंबिवली - भावेशभाई	90291 64654
पायधुनि - कल्पेशभाई	93245 23382
दादर - हस्तिकाबेन	98928 88966
अंधेरी - झवेरबेन	98334 94959
गोरेगांव - पीकीबेन	99695 45565
भायंदर - गौरवभाई	98331 39883
भायखला - रसिलाबेन	93211 04850

चोपाटी - मुकेशभाई	93222 78552
वालकेश्वर - भाविकभाई	98211 66679
पार्ला - बीनाबेन	98332 90137
धाणा - रमेशभाई	98197 42920
पूना - संदिपभाई	94225 12059
नासिक - राकेशभाई	97300 11110
बेगलोर - हर्षिलभाई	99000 15784

#### गुजरात विभाग

सुरत - विपुलभाई	98241 02051
सुरत - देवांगभाई	97268 25745
वडोदरा - विपुलभाई	98980 61823
वडोदरा - आकाशभाई	94274 60140
अमदावाद - संजयभाई	93753 37141

अमदावाद - कौशिकभाई	93279 95499
उंझा - विजयभाई	99250 11774
महेसाणा - भावीनभाई	98792 18081
नवसारी - विजयभाई	98245 78904
राजकोट - प्रकाशभाई	93741 02061
जामनगर - निशीतभाई	94299 41554
पालनपुर - जगदीशभाई	94293 61149
वलसाड - धर्मेशभाई	94277 86683
गोधरा - केतनभाई	93277 11077

#### ओम.पी. विभाग

श्री नवकार परिवार (सम्यग् ज्ञान विभाग)	
अमीतभाई मुणत	98272 75740
प्रविणभाई गुरुजी	94259 04078



## अनुक्रमणिका / INDEX

❀ ये सब शरण नहीं देते / These do not provide shelter	3
❀ कान में खीले / Nail in the ears	4
❀ छोटे को कमजोर मत समझो / Small is not weak	7
❀ तत्त्व जानकर जैन बने / Known elements to become Jain	10
❀ मधुबिंदु / Honey Drop	12
❀ संत की करुणा / Mercy of a Saint	15
❀ किस के कितने गुण ? / How many virtue of each ?	18
❀ लांछन पहचानो / Recall Lanchan symbol	19
❀ तारणहारा नवकार / Navkar the Saviour	20
❀ मरण का भय / Fear of Death	23
❀ संबंध वाले नाम जोड़ो / Match the related Name	26
❀ आकाश में कितने तारे ? / Counting the Stars ?	27
❀ ज्ञान वृद्धि / Key of Knowledge	28
❀ टी.वी. एक दुषण / T.V. a Nuisance	30
❀ छोड़ ने जैसी बातें / Reason to Quit	32



### सरस्वती प्रार्थना



हे शारदे माँ, हे शारदे माँ । अज्ञानता से हमें तार दे माँ ।  
तु स्वरकी देवी, ये संगीत तुजसे, हर शब्द तेरा, हर गीत तुजसे,  
हम हैं अकेले, हम हैं अधुरे, तेरी शरण में हमें प्यार दे माँ ।.....(१)  
मुनिओने समझी, गुणीओने जाणी, संतो की भाषा आगमों की वाणी  
हम भी तो समझे, हम भी तो जाने विद्या का हमको अधिकार दे माँ.... (२)  
तु श्वेतवर्णी कमल पे बिराजे, हाथों में विणा, मुकुट शिर पे छजे,  
मनसे हमारे मिटा दे अंधेरा, हमको उजालों का परिवार दे माँ.... (३)



### Saraswati Prayer



He Sharde Maa ! He Sharde Maa !, Agyanta se hame taar de maa !  
Tu swarki devi, yein sangeet tujhse, har shabd tera hai har geet tujhse,  
Hum hai akele, hum hai adhoore, teri sharan mein hame pyar de maa.....1

Muni oo ne samzi, guni oo ne jaani, Sant oo ki bhasha, aagam oo ki vaani,  
hum bhi to samje, hum bhi to jaane, vidya ka humko adhikar de maa !....2

Tu shwetvarni kamal pe biraje, hathoo mein veena, mugut sheer pe chaaje  
Manse hamare mita de andhera, humko ujalo ka parivaar dein maa !....3





## ये सब शरण नहीं दे सकते



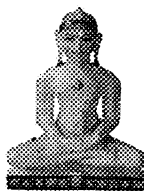
**These do not provide shelter or protection**

दुःखो से कौन बचाए ?

अशान्ति से कौन बचाए ?

रोग से कौन बचाए ?

क्लेश से कौन बचाए ?



जो स्वयं दुःखी है वो दुसरो को दुःख-रहित कर सकता है ?

जो स्वयं अशान्त है वो किसी को शांत रख सकता है ?

जो स्वयं रोगी हो वो दुसरो को निरोगी कर सकते है ?

जो स्वयं क्लेश - कंकास युक्त हो वो दुसरो को क्लेश - कंकास से मुक्त कर सकते है ? **नहीं - नहीं .....**

ये दुनिया दुःख, रोग, अशान्ति, क्लेश - कंकास से भरपूर है.

अनेक चिंताओ एवं मुसीबतो से भरी हुई है ।

इस दुनिया मे हमारी आत्मा को कौन बचाए ?

कोई भी नहीं बचाता

Who protect us from grief ?

Who protects us from inrest ?

Who protects us from diseases ?

Who protects us from quarrel & disputes ?

Can someone, who himself is grief striker protect us from grief ?

Can someone who himself is restless protect us from unrest ?

Can someone who himself is ill, protect us from disease ?

Can someone who has disputes can protect us from quarrels and disputes ?

**No..... Absolutely not..... !**

The world is full of grief, disease, unrest disputes.

It is full of troubles and lots of tension.

Who shall protect our soul ? No one and just no one.....



शत्रुओ से सैनिक बचाते है ना ?

रोग से डॉक्टर बचाते है ना ?

अशान्ति से सम्बंधी बचाते है ना ?

Don't the soldiers protect us from enemies ?

Don't the doctors protect us from diseases ?

Don't the relatives protect us from unrest ?

हाँ, बचाते है पर, हमेशा के लिए नहि !

Yes, of course they protect us but not forever.

रक्षण करते है पर, हमेशा के लिए नहीं !

Yes, of course they save us but not forever.

सहाय करते है पर, हमेशा के लिए नहीं !

Yes, of course they help us but not forever.



शत्रुओ से भी मरते है

रोग से भी मरते है

अशान्ति से भी मरते है

Many get killed by the enemies.

Many die due to diseases.

Many die due to unrest, stress & tension.

**मरण से कोई बचाता है क्या ? हाँ**

**जिनेश्वर भगवान बचाते है - गुरुदेवो का सत्संग बचाता है । देव-गुरु ही सच्चा शरण प्रदान करते है । इनके अलावा कोई भी सच्चा शरण नहीं है ।**



Can anyone save us from the gallows of death ?

**Yes, the Lord (Jineshwar Bhagwan) can save the association with Guru can save !**

**Dev, Guru can give true protection.**







## कान में खीले



अभी जिनका शासन चल रहा है वो श्री भगवान महावीर जिन के जन्म के साथ ही इन्द्र महाराजा का सिंहासन कम्पायमान हुआ। भगवान श्री महावीर चन्द्र से भी अधिक शीतल, सूर्य से भी अधिक तेजस्वी, सागर जैसे गंभीर थे, ऐसे अनगिनत गुणों के भण्डार यानि भगवान श्री महावीर।

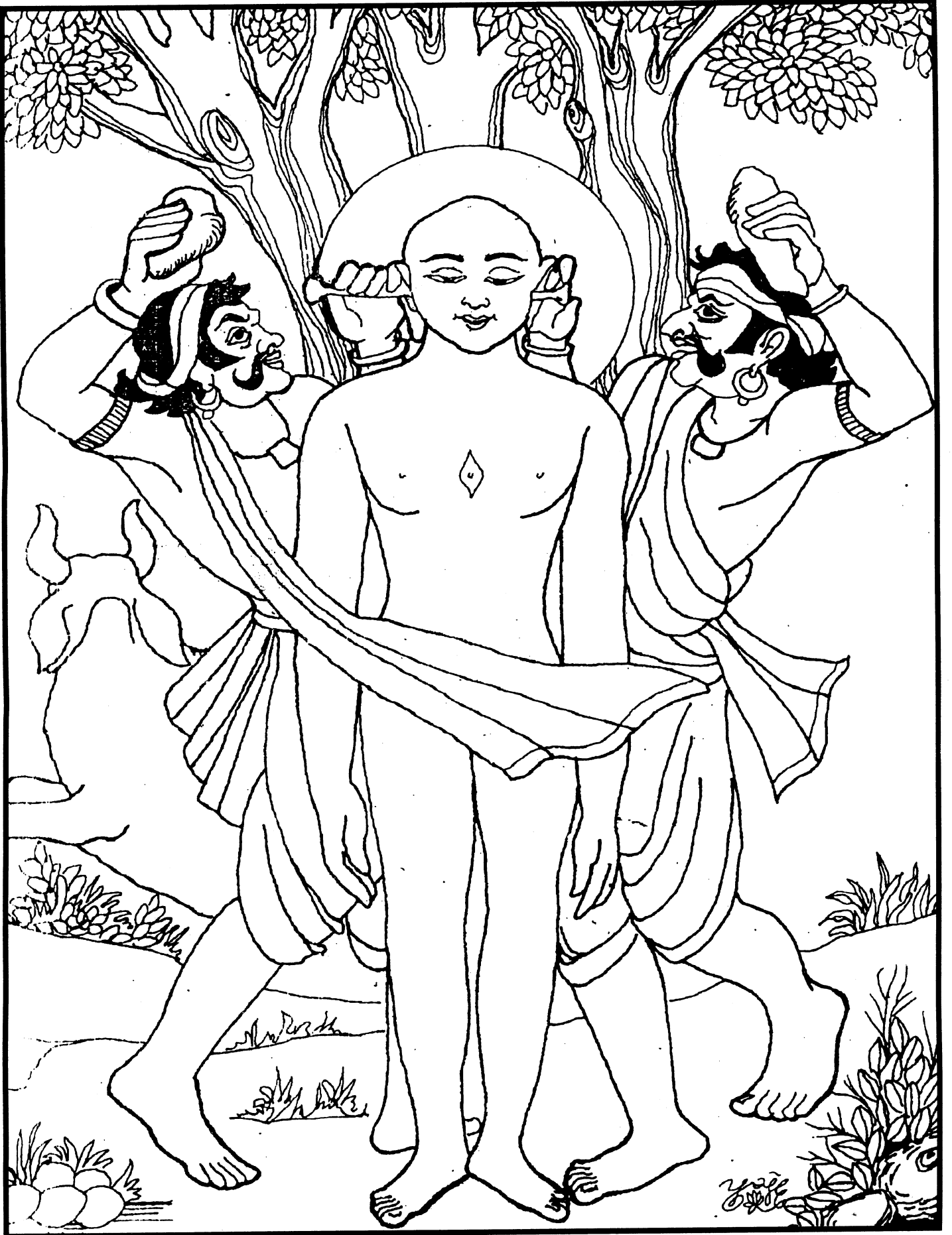
अपने जन्मदिन पर २०० - ५०० लोग आते होंगे किंतु श्री भगवान महावीर के जन्ममहोत्सव पर असंख्य देव आते हैं। बड़े ठठ-माठ पूर्वक जन्ममहोत्सव मनाया जाता है। भगवान महावीर बचपन से ही निडर एवं निर्भय प्रकृति के थे। मध्याह्न समय के सूर्य समान भगवान ने भी तेजस्वी युवा अवस्था को प्राप्त किया। २८ वर्ष की उम्र में माता - पिता का अवसान हो गया। उसके बाद बड़े भाई के पास दीक्षा लेने की अनुमति मांगी। भाई ने कहा - माँ-बाप के विरह का दुःख दूर नहीं हुआ और तुम दीक्षा की बात करते हो। क्यों घाव पर नमक डालते हो। २ साल तो ठहर जाओ। भाई की बात मानकर २ साल रुक कर ३० वर्ष की उम्र में वैशाख वद-१० के दिन दीक्षा हुई। दीक्षा के बाद १२ १/२ साल तक घोर उपसर्ग (कष्ट) सहन किये। चंडकोशिक का डंश, गोशाला, संगमदेव, कटपुतना व्यंतरी कालचक्र - ये सभी जानलेवा उपसर्ग थे। समर्थ होने पर भी भगवान ने सभी कष्ट सहन किये। पर उनका कभी सामना नहीं किया। **सहना ही साधना है, सहन करने से आत्मिक - शक्ति प्रगट होती है।**

भगवान को उपसर्ग तो अनेक हुए पर उनमें भी गोवालक का उपसर्ग बेहद पीडाकारी था। जब भगवान काउस्सग ध्यान में स्थिर थे तब गोवालक ने प्रभु के पास अपने बैल छोड़ दिए और "मेरे बैलों की रखवाली करना" यु कहकर चला गया। प्रभु को ना तो गोवालक के वचन का ध्यान था ना ही बैलों का। वो तो अपने ही आत्मध्यान में निमग्न थे। षट्द्रव्य का चिंतन सतत चल रहा था। अंतर में चलते हुए आत्मध्यान को अबुध गोवालक कैसे जान सकता है। वो अपना कार्य पूर्ण कर जब वापस आया तो देखा की बैल तो गायब हैं। इधर - उधर खोजने लगा, किन्तु बैल मिले नहीं। आखिर में थक - हारकर जब प्रभु के पास आया तो बैल भगवान के पास ही बैठे हुए थे। ये देखकर गोवालक को अत्यंत गुस्सा आ गया। मेरे बैलों को क्यों छुपाया? क्या मेरा मजाक उड़ा रहे थे। फिर भी प्रभु तो कुछ भी बोले नहीं। प्रभु को मौन देखकर गोवालक का दिमाग ओर अधिक गरम हो गया। इसके तो कान निकम्मे हैं जो सुनता ही नहीं। ये सोचकर पास के पेड़ की डाल तोड़कर ले आया। उस डाल के तीक्ष्ण खीले बनाकर भगवान के कानों में ठेक दिए। अन्दर से दोनों कीले आपस में जुड़ गए। बाहर से कोई इन्हें निकाल न दे ये सोचकर बाहर का हिस्सा तोड़ दिया। इतनी अपार वेदना होने के बावजूद भी, सामना करने का सामर्थ्य होने पर भी भगवान ने सब कुछ सहन किया। न गोवालक को सजा दी, न स्वयं भयभीत बने, पूर्ववत् प्रसन्न मुख मुद्रा से बर्दाश्त करते रहे। ये था भगवान महावीर का उत्कृष्ट उपसर्ग।

इस तरह अनेक छोटे - बड़े उपसर्ग सहनकर, घातीकर्म को क्षयकर केवलज्ञान प्राप्त किया और जगत् पूज्य बने।

**बोध :** प्यारे बच्चों - महान पुरुषों में कितनी बेमिसाल करुणा होती है। जो सहन करता है, वो ही महान बनता है। भगवान ने कितना सहन किया। सक्षम होने पर भी संघर्ष नहीं किया। आप भी सहन करना सीखो।





1. कान में खीले / Nail in the ears





## Nail in the Ears



Currently we are living in the religious regime of Lord Mahavir at the time of whose birth the throne of Indra Maharaj had tumbled. Lord Mahavir ! more soothing than the moon, brighter than the sun, more considerate than the sea was full of many other virtues.

Unlike ours, his birth occasion was celebrated by innumerable demi gods with great pomp and splendour. Lord Mahavir was brave and fearless since childhood.

His brilliance grew with each passing day as the brightness of the rising sun would grow. He lost his parents at the age of 28. He then asked permission to accept monk hood from his elder brother. His brother was grief stricken because of the loss of his parents and requested Lord Mahavir to wait for separation from Mahavir. At the age of 30 on the day of Vaishakh Vadi - 10, Lord Mahavir accepted Diksha and renounced worldly pleasure. Then for a period of twelve and a half years he walked on the path of liberation and accepted all the troubles calamities (upsarg) which came his way. Most of them were of extreme nature which a normal human being can not stand. Sufferings (upsarg) caused by Chandkoshik Snake, Goshala, Sangamdev, Katputni Vyantari and Kaalchakra by Sangamdev were life threatening. Simply accepted all the sufferings which came his way. To tolerate is the path to attainment of Moksha. Endurance increases the strength of our soul. Lord Mahavir faced many troubles & calamities but the one caused by Gowalia (Shepherd) was the harshest.

Once Lord Mahavir was standing firm in meditation, a Shepherd (Gowalia) approached him and left his bullocks near the Lord and told him to take care of them. The lord was deep in to meditation and did not knew anything happening around him. When the shepherd returned back he did not find his bullocks where he had left them. He looked them everywhere but could not trace them. When he returns back after unsuccessful search he finds the bullocks sitting near the Lord.

He gets very angry. Why did you hide my bullocks ? 'Are you playing pranks with me ?' He asked. But the Lord does not reply, this makes him more angry. He said to himself, he does not hear anything and thus his ears are useless. With this in mind he brought two small branches of a tree and sharpened their edges. He hammered these two sharp wooden nails into the Lord's ears till they touched each other. To make sure that nobody could see and remove them, he cut the extended edges. In spite of having strength to oppose this, Lord Mahavir calmly tolerates. He did not intimidate the shepherd, neither got afraid nor stopped the shepherd from committing this heinous act. He tolerated this suffering with a calm mind. This was one of the biggest calamity faced by the Lord.

In this way by tolerating many such big and small calamities Lord Mahavir attained omniscience by destroying all of his Ghaati Karma and hence became revered by humans demi gods and Indras.

**Moral : Dear Children ! This is the mercy of Lord Mahavir. Tolerance makes us great. Lord Mahavir did not oppose even though he had the strength but simply tolerated whatever came his way. So ! children you should also learn to tolerate and not oppose.**





## छोटे को कमजोर मत समझो



एक बड़ा - सा जंगल था। चारों ओर बड़े - बड़े पेड़ थे। बहुत - सारे प्राणी वहाँ बसते थे। तमाम प्राणी अपनी अपनी मस्ती से जीवन यापन कर रहे थे। उस जंगल में सिंह की एक गुफा थी। गुफा के पास ही चुहे का बिल था। सभी प्राणियों का राजा याने सिंह उस गुफा में रहता था। सारे प्राणी उससे डरते थे साथ ही वे बुद्धिशाली जीव भी उससे भयभीत रहते थे।

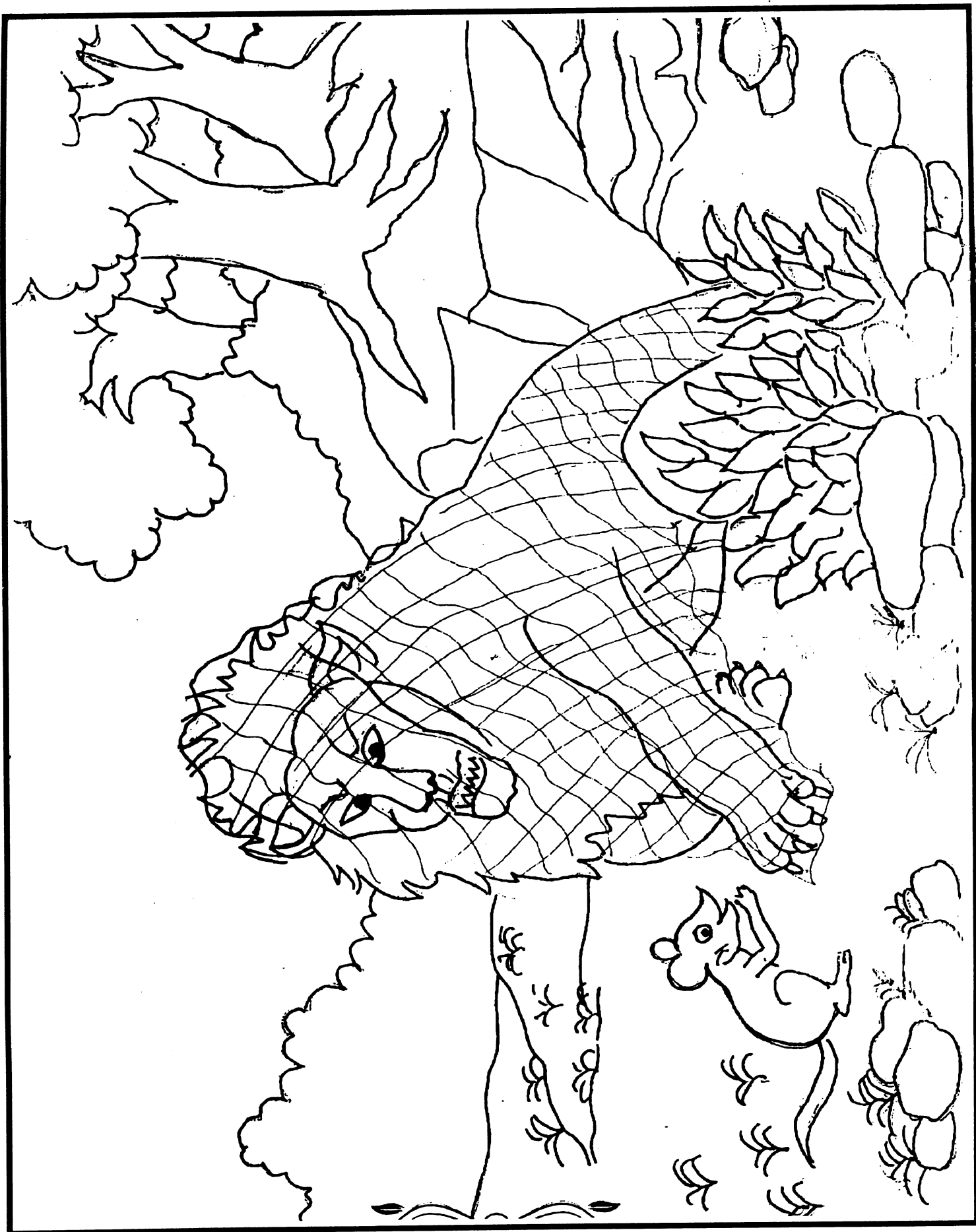
एक दिन दोपहर के समय जंगल के सम्राट सिंह गुफा के पास आराम फरमा रहे थे। तभी बिल में से कुदाकुद करता हुआ एक नन्हा सा चुहा वहाँ आ गया। सोए हुए सिंह के शरीर पर भाग - दौड़ करने लगा। वो तो अपनी मस्ती से खेल रहा था। पर इस बात से अनजान था, की वे जिस पर कुदाकुद कर रहा है वो जंगल के राजा है। वो तो खेलने में मस्त था की अचानक सिंह निंद में से जाग गया। सोचा - ये कौन दुष्ट है जिसने मुझे ही खेलने का मैदान बना लिया। देखा तो चुहा था। शेर तो गुस्से से लाल - पीला हो गया। और चुहे को पंजे में कस कर पकड़ लिया। गुस्से में पुछा - अरे चुहे ! तेरी इतनी हिम्मत ? अब तो तेरी मौत आ ही गई है।

क्या तु मुझे नहीं पहचानता ? मैं इस जंगल का राजा हूँ। सारे प्राणी मुझसे डरते हैं, तेरा इतना साहस ? चुहा तो सुनते ही थर - थर काँपने लगा। घबराते हुए बोला। महाराज मेरी गुस्ताखी माफ कीजिए। आप तो जंगल के राजा हैं, मैं तो एक छोटा सा जीव हूँ, कृपा करते मुझे जीवनदान दीजिए। आपका ये एहसान कभी भी नहीं भुलूंगा। दोबारा ऐसी गलती नहीं करूंगा। कभी न कभी आपके उपकार का बदला अवश्य चुका दूंगा।

सिंह मन में हँसते हुए बोला - अरे चुहे मैं इतना बड़ा जंगल का राजा तो छोटा सा चुहा - तू क्या बदला चुकाएगा ? किन्तु पहली बार भूल हुई है इसीलिए जाने देता हूँ। अब ऐसी हरकत की तो छोड़ूंगा नहीं। चुहे ने कहाँ - ठीक है। और बिल के पास जाकर खेलने लगा।

कितने ही दिन पसार होने के बाद एक दिन अचानक कोई शिकारी सिंह को पकड़ने के लिए आया। परन्तु सिंह को पकड़ना छोटे बच्चों का खेल नहीं है। जान भी जा सकती है। वो शिकारी सिंह को पकड़ने के लिए जमीन से जाल बिछाकर पेड़ पर चढ़ गया। कुछ देर बाद सिंह वहाँ से शिकार के लिए गुजर रहा था। जैसे ही वह जाल पर आया शिकारी ने तुरंत जाल को खिंच दिया। पराक्रमी राजा सिंह उस जाल के अन्दर फँस गए। सिंह ने छुटने के लिए अथक प्रयास किए पर सब निष्फल हुए। तब गर्जना करने लगा। चुहे को आवाज सुनाई दी। ये तो सिंह की आवाज है, जरूर किसी आफत में पड़े होंगे। आवाज की दिशा में दौड़ते हुए तत्काल सिंह के पास पहुँच गया। चुहे ने जाल में फँसे हुए सिंह को कहाँ - महाराज ! आप घबराइए मत। मैं अभी आपको इस जाल से मुक्त करता हूँ। इस तरह वह चुहे ने अपने तीखे दांतों से जाल को काटना शुरू कर दिया। धीरे - धीरे पूरी जाल काट दी। सिंह को बन्धनों से आजाद कर दिया। सिंह आश्चर्य चकित हो गया। खुश होकर चुहे का आभार मानते हुए कहने लगा - दोस्त ! मैंने तुझे उस समय मार दिया होता तो आज मुझे कौन बचाता। तूने सच ही कहा था। "मैं आपको कभी ना कभी काम आऊँगा।" मुझको आज ये सबक मिला कि बड़े प्राणी कभी भी छोटे प्राणियों को कमजोर न समझे।

**बोध :** प्यारे बच्चों ! अपने से छोटे हो या बड़े, कभी किसी की अवगणना नहीं करनी चाहिए। क्योंकि छोटा हो या बड़ा। वक्त पर सभी की जरूरत पड़ती है। इसलिए सभी के साथ हिलमिल कर रहना चाहिए।



2. छोटे को कमजोर मत समझो / Small is not Weak





## Small is not Weak



There was a big jungle. There were huge trees all around and many animals lived there. A lion lived in a cave in the jungle. A mouse lived in a hole near this cave. All the animals were afraid of the lion.

Once the lion was sleeping near his cave in the afternoon. The mouse playfully came out of his hole climbed on the body of the lion and started jumping over it. He had no idea that it was lion the king of the jungle. The lion suddenly woke up. He thought, who is jumping over my body and disturbing my sleep ? He saw that it was a small mouse. He got very angry and he caught the mouse with his paw. He said angrily. "How dare you jump on my body ?" "Now, you are finished"

"Don't you know that I am the king of the jungle. All the animals are afraid of me and you did to disturb my sleep !" The mouse started shivering and said, "Lord ! Please forgive me, You are king of the jungle. I am just a small animal, please let me go ! I will never forget your obligation and never make such a mistake again. One day I shall repay your obligation.

The lion smiled and said, "You are such a small animal and I am the king of this jungle, how will you repay my obligation ? As this is your first mistake I am letting you go, but I will not leave you if you do it again". The mouse thanked the lion and went near its hole and started playing.

Many days later a hunter came to the jungle, to catch a lion. Catching a lion alive is not a child's play. He laid a net to trap the lion and climbed up a nearby tree. After some time as the lion passed over the net, the hunter lifted the net and the lion got trapped in the net. The lion roared very loudly. The mouse heard the lions roar. He said to himself. "The king of the jungle must be in trouble". He ran in the direction of sound and saw the trapped lion. He said. "Lord ! Do not be afraid I will soon get you free".

With his sharp teeth the mouse started cutting the net and soon he cut the entire net and got the lion free. The lion was happy to be free and said, "Friend, If I would have killed you on that day then who would have saved me today. You were right when you said that you will be useful to me one day. Today I understood that big animals should not consider the smaller animals as weak".

**Moral : Dear Children ! Do not ignore anyone either smaller or bigger, because bigger or smaller may be useful to during calamity. So always be polite with all.**



## तत्त्व जानकर जैन बने



- (१) नवपद में कितने पद का वर्ण श्वेत (सफेद) है ?  
 (अ) चार (ब) पाँच (क) छे (ड) सात
- (२) महावीर स्वामी का जन्म-कल्याणक दिवस कब आता है ?  
 (अ) श्रावण सुदी पंचमी (ब) आषाढ सुदी छठ (क) चैत्र सुदी तेरस (ड) पोष वदी दशमी
- (३) चौद पूर्व का सार कोन है ?  
 (अ) नवकार मंत्र (ब) करेमि मंते (क) कल्पसूत्र (ड) मनुत्पणं
- (४) वीर भगवान ने किसे धर्मलाभ कहेलाया था ?  
 (अ) रेवति श्राविका (ब) सुलसा श्राविका (क) चंदनबाला (ड) चंपा श्राविका
- (५) तारंगा तीर्थ किस ने बनवाया ?  
 (अ) संप्रति महाराजा (ब) कुमारपाल महाराजा (क) वस्तुपाल-तेजपाल (ड) पथड शाह
- (६) स्थूलभद्रजी का नाम कितनी चौवीसी तक अमर रहेगा ?  
 (अ) ३ चौवीसी (ब) ८४ चौवीसी (क) ८०० चौवीसी (ड) २४ चौवीसी
- (७) हरितनापुर किन तीर्थकर की जन्मभूमि नहीं है ?  
 (अ) अनंतनाथजी (ब) धर्मनाथजी (क) कुंथुनाथजी (ड) अरनाथजी
- (८) महावीर भगवान के जीव ने पच्चीसवें भव में कितने मासक्षमण किए थे ?  
 (अ) ११,८०,४५६ (ब) ११,८०,५६४ (क) ११,८०,६४५ (ड) ११,८०,५६५
- (९) २० तीर्थकर कहाँ से मोक्ष में गए ?  
 (अ) सम्मेतशिखर तीर्थ (ब) सिद्धाचल तीर्थ (क) गिरनार तीर्थ (ड) चंपापुरी तीर्थ
- (१०) मंदिर या उपाश्रय में प्रवेश करते क्या बोलना चाहिए ?  
 (अ) नमो जिणाणं (ब) निसीहि (क) आवस्सही (ड) जय जिनेन्द्र
- (११) जगचिंतामणि सूत्र किसने बनाया ?  
 (अ) सुधर्मास्वामीजी (ब) गौतमस्वामीजी (क) हरिभद्रसूरिजी म. (ड) यशोविजयजी म.
- (१२) भगवान महावीर के कितने गणधर थे ?  
 (अ) ९ (ब) १० (क) ११ (ड) १२

**तत्त्व जानकर जैन बने (दुसरे अंक के जवाब) :**

(१) ड (२) क (३) ब (४) ब (५) ब (६) ब (७) क (८) ब (९) ब (१०) ब (११) क (१२) क





## Known elements to become Jain



- (1) In navpad how many pads are white ?  
 (A) Four (B) Five (C) Six ~~(D) Seven~~
- (2) Janma Kalyanka (Birthday) of Lord Mahavir falls on which day ?  
 (A) Shravan Sud-5 (B) Ashadh Sud-6 ~~(C) Chetra Sud-13~~ (D) Posh Vad-10
- (3) Which satra is extract of Chaud Purva ?  
 (A) Navkar ~~(B) Karemi Bhante~~ (C) Kalp Sutra (D) Namuthunam
- (4) To which Shrivika did Lord Mahavir send the blessings of Dharma-labh ?  
 (A) Revati Shrivika ~~(B) Sulsha Shrivika~~ (C) Chandanbala (D) Champa Shrivika
- (5) Who has built Taranga tirth ?  
 (A) Samprati Maharaja ~~(B) Kumarpal Maharaja~~ (C) Vastupal Tejpal (D) Pethad Shah
- (6) Sthulabhadraji will be remembered for how many Chauvisis ?  
 (A) 3 Chauvisi ~~(B) 84 Chauvisi~~ (C) 800 Chauvisi (D) 24 Chauvisi
- (7) Hastinapur is not a birth place of which Tirthankar ?  
 (A) Anantnathji (B) Dharmanathji ~~(C) Kunthunathji~~ (D) Arnathji
- (8) How many Maskshaman (30 day fast) did Lord Mahavir do in his 25th inearnation ?  
 (A) 11,80,456 ~~(B) 11,80,564~~ (C) 11,80,645 (D) 11,80,565
- (9) From where did 20 Tirthankars gone moksh ?  
 (A) Sammetshikarji Tirth ~~(B) Siddhachal Tirth~~ (C) Girnar Tirth (D) Champapur Tirth
- (10) What we have to speak when we enter to the Upashray ?  
 (A) Namō Jinanam ~~(B) Nisihi~~ (C) Avassani (D) Jay Jinendra
- (11) Who has Jag Chintamani Sutra ?  
 (A) Sudharma Swamiji (B) Gautam Swamiji ~~(C) Haribhadra Suri~~ (D) Yashovijayji M.
- (12) How many Gandharas did Mahavir Swami have ?  
 (A) 1 (B) 10 ~~(C) 11~~ (D) 12

**KNOW ELEMENTS TO BECOME JAIN - EDITION 2ND ANSWER**

**Answer : (1) D (2) C (3) B (4) B (5) B (6) B (7) C (8) B (9) B (10) B (11) C (12) C**



## मधुबिंदू



जैन शासन में संसार को अनेक उपमाएँ दी गई हैं, जैसे संसार दावानल जैसा है, अंधेरे कुँए जैसा है, सागर जैसा है, मधुबिंदू जैसा है। आओ बच्चों ! हम मधुबिंदू के दृष्टांत से संसार को समझने की कोशिश करते हैं।

एक व्यक्ति घने जंगल से गुजर रहा था। सामने से उसे विशालकाय पागल हाथी आते दिखा। वो अकेला था, उसे लगा कि बस, अब तो सो साल पूरे हो गए। हाथी नजदीक आ रहा था और तभी उसे वटवृक्ष नजर आया। दौड़कर उसने एक शाखा पकड़ ली। वो समझा कि बच गया पर यहाँ तो एक दुःख गया नहीं और दूसरा दुःख आ टपका। वो जिस शाखा को पकड़े हुए था उसे एक काला और एक सफेद चूहा मिलकर काट रहे थे। नीचे देखा तो एक भयंकर अंधेरे कुँए में चार सर्प और एक अजगर जीभ लपलपाते उसे ही देख रहे थे। उधर हाथी अपना पूरा दम वृक्ष उखेड़ने में लगा रहा था। हाथी के वृक्ष हिलाने से उसकी पकड़ी शाखा भी हिल रही थी। उस डाली पर मधुमखियाँ का छत्ता था। हिलने से मधुमखियाँ उड़-उड़ कर उसे काटने लगी पर बीच-बीच में एक-दो बूँद शहद भी टपक कर उसके मुँह में जाने लगा। चारों तरफ संकट ही संकट पर वो संकटों को भूलकर मधु की बूँद के टपकने का इंतजार करने लगा।

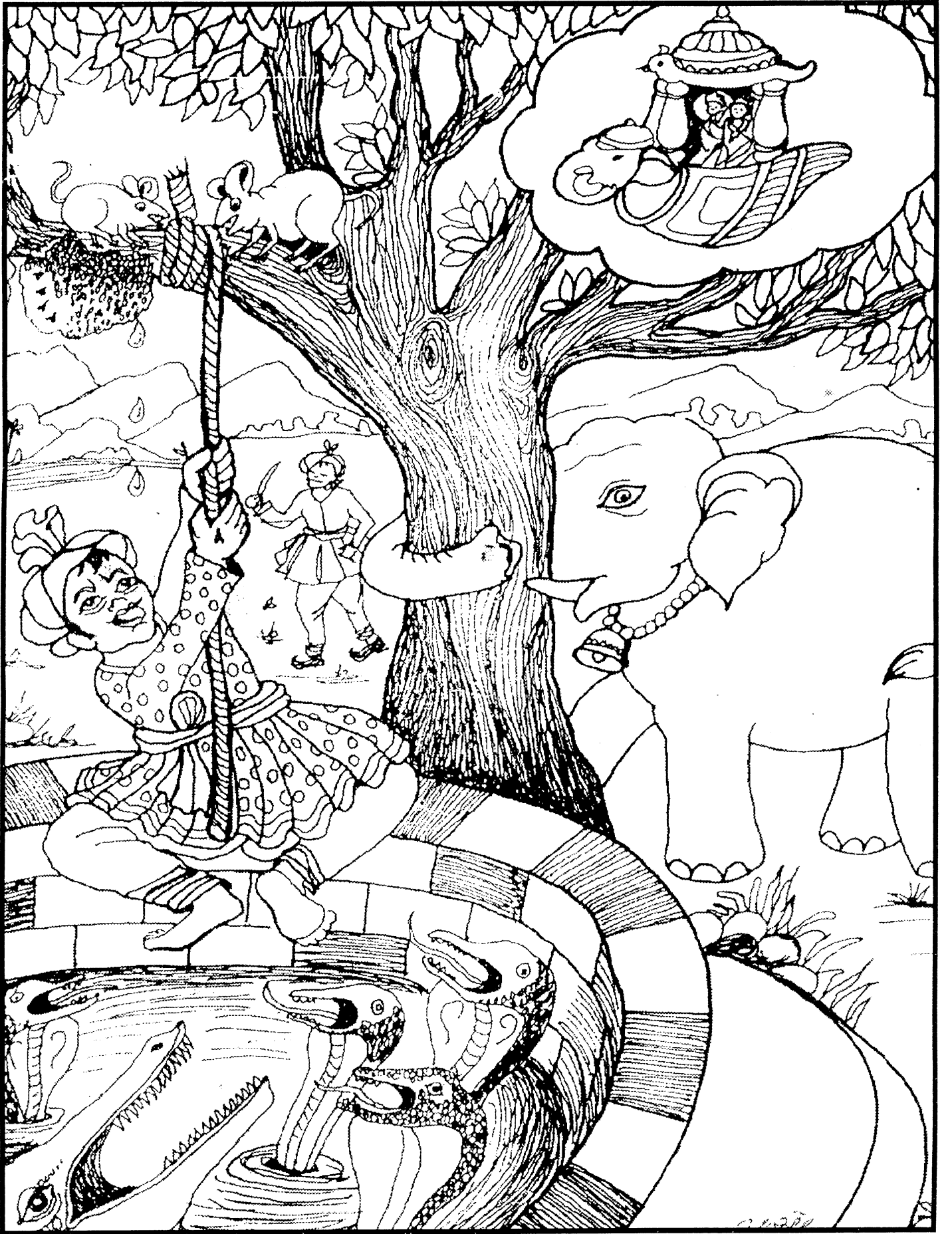
ठीक उसी समय एक विद्याधर आकाशमार्ग से विमान में बैठकर कहीं जा रहा था। उस व्यक्ति की दशा देखकर उसे बहुत दया आई। उसने उस भाई से कहा, “भाई ! मेरे विमान में बैठ जा, मैं तुझे सुरक्षित स्थान पर छोड़ दूँगा।” उस भाई ने कहा, “आप थोड़ी देर रुक जाओ, थोड़ा शहद और टपक जाए।”

चारों ओर भय ही भय है। अगर चूहे डाली काट दे तो नीचे कुँए में अजगर ओर साँप मुँह फाड़े बैठे हैं। हाथी वृक्ष उखेड़ दे तो वृक्ष के नीचे दब जाएगा या हाथी पैरों के नीचे कुचल देगा और मधुमखियाँ का काटना तो लगातार जारी है ही। तो भी सभी दुःखों से छुटने का उपाय सामने है पर मधु की एक बूँद की तृष्णा के कारण वो दुःख-मुक्त नहीं हो सकता। कितनी करुणाजनक स्थिति है ?

इस रूपक वार्ता में संसार एक भयंकर जंगल है, मनुष्य भव वटवृक्ष है। इस वटवृक्ष पर रहे मानवी की जीवन रुपी डाली को शुक्ल पक्ष-कृष्ण पक्ष रूप दोनों चुहे काटने की कोशिश कर रहे हैं। यमराज रुपी गजराज (हाथी) वृक्ष को उखाड़ रहा है। नीचे दुर्गति रूप अंधेरा कुआ है। उसमें क्रोध-मान-माया-लोभ रूप चार सर्प और मोह रूप अजगर फुटकार कर रहे हैं। आधि-व्याधि-उपाधिरूप मधुमखियाँ काट रही हैं। ऐसी विषम परिस्थिति में मधुबिंदू समान विषय-तृष्णा के कारण इस बेचारे को ऐसी महाअटवी में से बाहर निकलने का मन नहीं होता। विद्याधर समान गुरु भगवंत जीव की विकट परिस्थिति देख करुणा से संयम रुपी विमान में अपने साथ आने के लिए समझाते हैं पर वो अभी भोगविलास में आनंद मिलेगा इस आशा से डाली से लटका रहता है।

**बोध :** प्यारे बच्चो ! संसार सुख मधुबिंदू जैसे हैं, जिसको पाने में आगे-पीछे दुःख ही दुःख हैं फिर भी सुख की आशा में जिंदगी बेकार कर देता है।





3. मधुबिंदू / Honey Drop



## Honey Drop !!



In Jainism (or Jin Shashan) the world is referred with various antonyms such as 'Dreaded Sea', 'Dark Well', 'Fierce Volcano' etc. One of the other antonyms is the example called 'Honey Drop'. It describes awful condition of people who are fond of worldly pleasures.

Once a person was passing through a dense and fierce forest. He was alone and there was a fear of many wild animals every moment. Suddenly he saw a wild and mad elephant rushing towards him. The man immediately starts running to save his life. The elephant comes closer to him and in a split second the man leaps towards a branch of a tree and saves himself from the elephant. He heaves a sigh of relief. He does not know that though he has saved himself from one trouble he has to face many more problems now. While hanging on the branch, he sees above and notices that two rats one white and other black, are cutting the very branch on which he is hanging. With the fear of falling down he sees below and finds a dark well with four snakes and a dreaded python waiting to swallow him alive. Meanwhile the mad elephant had reached the tree and is shaking the tree and applying all his strength to uproot it. There is a honey comb on the branch on which the man is hanging. Due to the shaking of the tree the honey bees keep on stinging the man. This is nature ! when grief and sorrow strike they do so from all the directions. In spite of all the sufferings the man wishes to have a single drop of honey from the honey comb. He forgets all the pain and awaits for a single drop of honey to fall from the honey comb.

At that moment a Vidyadhar (dev) passes above him in his aeroplane. Sees the pitiable condition of the man feels mercy for him. One who wishes to reduce pain of others is an angel and one who wishes to increase them is a devil. Let us check, what type of feelings we possess.

The Vidyadhar said, "Brother, you are faced with so many threats all around and you may be full of sorrow and grief. If you board my plane, I will take you to a safe place".

The man is hopeful that very soon a honey drop will fall from the honey comb and he will be able to relish it. He says, "Brother, wait for sometime let me have this honey first."

Imagine the threats the man is facing. The rats are cutting into the branch... Snakes and Pythons in the dark well below are ready to swallow him alive. The mad elephant is shaking the tree and it may get uprooted and the man may either get crushed under the tree or the elephant will crush him to death. The bees are biting him continuously. There is an opportunity to escape from all these threats but the desire of a honey drop does not let him escape this dreadful condition.

Is this not a merciful situation ?

**Moral : Dear Children ! This fictional story in Jain doctrines describes condition of every individual who is wandering in this world for pleasures which are similar to honey drop ! The world is a dreaded jungle.**





## संत की करुणा



यह हिन्दुस्तान के एक संत का प्रेरणास्पद जीवन प्रसंग है। जिन के अन्तर में प्राणीयो के प्रति अत्यंत / अपार करुणा थी। जिसका अहसास लोगो को गंगा नदी मे स्नान करते समय हुआ।

बात यू बनी थी।

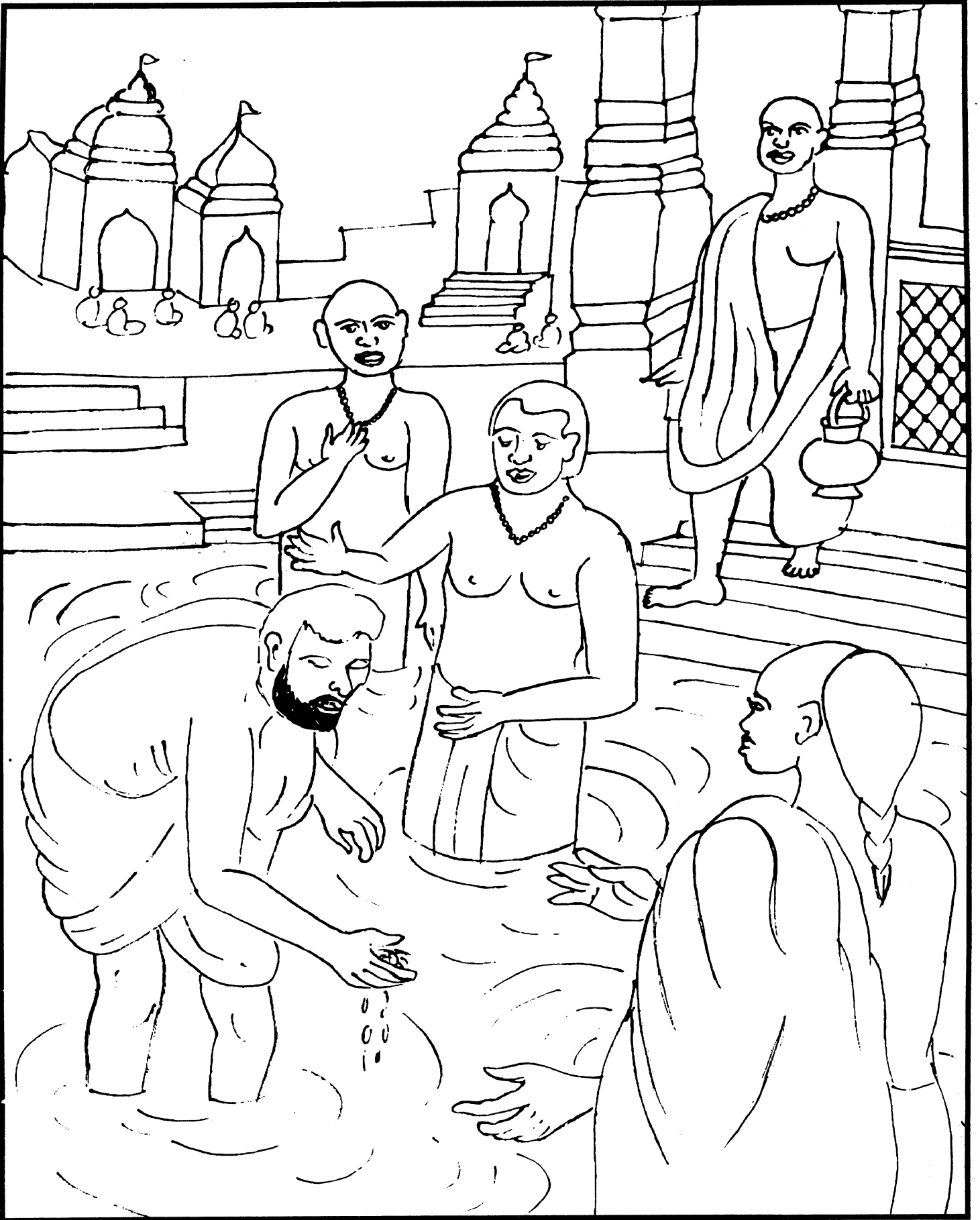
एक दिन सुबह स्वामीजी स्नान करने के लिए साथियो के साथ गंगा नदी पर गए थे। नदी का सुरम्य किनारा था, घाट पर अनेक मंदिर एवं मठ थे।

स्वामीजी जैसे ही स्नान के लिए नदी मे उतरे कि उनकी दृष्टि पानी में डुबते हुए एक बिच्छु पर पड़ी। वो अपनी जान बचाने के लिए जी तोड़ मेहनत कर रहा था। किंतु उसके सारे प्रयास निष्फल हो रहे थे। स्वामीजी के दिल मे दया का सागर उमड़ने लगा। मन ही मन मे निश्चय कर के बिच्छु की जान बचाने आगे बढ़े। पानी से बाहर निकालकर बिच्छु को हाथ पर उठ लिया। हृदय मे अद्भूत दया भाव। दुष्ट स्वभावी बिच्छु ने स्वामीजी के हाथ पर काट खाया ओर उन्हे झटका लगने के कारण बिच्छु फिर से पानी मे जा गिरा। पर स्वामीजी ने फिर से उसे उठ लिया, किन्तु नीच स्वभावी बिच्छु ने पुनः काट लिया। फिर झटका लगा ओर बिच्छु पानी मे जा गिरा। कैसा स्वभाव है ? अपने उपकारी पर भी अपकार कर रहा है। किन्तु स्वामीजी के मन मे बिच्छु के प्रति थोड़ा सा भी द्वेष भाव न आया।

उन्हे मालुम था स्वभाव ही ऐसा है, फिर भी उसे बचा रहे थे। पुनः बिच्छु को बचाते देखकर अन्य साथी बोल उठे - “मरने दो इसे। इसका स्वभाव ही दुष्ट है कि यह बचाने वाले को भी नहीं छोड़ता।” स्वल्प शब्दो मे स्वामीजी ने प्रत्युत्तर दिया - “ये इसका काटने का दुष्ट स्वभाव नहीं छोड़ता तो मे मेरे बचाने के संत स्वभाव को कैसे छोड़ सकता हूँ।” स्वामीजी बिच्छु को बचाने का प्रयास करने लगे।

जीवन मे दयागुण आत्मसात होगा तो उसके साथ क्षमा, सहानुभूति उदारता, परोपकार आदि गुण स्वयमेव ही आ जाएंगे। क्योंकि दया रुप चुंबक उन अन्य गुणो को अपनी ओर खींचे बिना नहीं रह सकता।

**बोध: प्यारे बच्चो ! (अ) जीवन मे हमेशा दुसरो के हित के बारे मे अवश्य सोचना चाहिए। चाहे वह हमारा नुकसान करे फिर भी हम उनके लिए अच्छा ही सोचे। (ब) अपकार करने वाले पर उपकार करना - ये सज्जनता की निशानी है।**



जशमीनाबेन जैन (भायखल्ला)

#### 4. संत की करुणा / Mercy of Saint



## Mercy of Saint



This is a story of an Indian Saint (Swami) whose heart was filled with mercy for all living beings. People witnessed this mercy one day when he was bathing at river Ganga.

Once, the saint went to river Ganga for bathing with few other people. The river edge was beautiful with many temples and ashrams along the river line.

As the saint entered the river he saw a scorpion drowning in the water and making all the efforts to save itself. But it was failing in its attempts.

The saint was merciful he decided to save the scorpion and lifted him with his hands from the water. The wicked scorpion bite the saint on his hand and it caused a jerk on the saints hand which resulted in the scorpion falling in the water again. The saint again lifted him from the water and the scorpion bite him again and the jerk of saint's hand made the scorpion fall in the water again. the nature of the scorpion is such that it bites even to those who obliges it. But there was absolutely not remorse in the heart of the saint as he knew the nature of the scorpion. He again reached for the scorpion to save it. His fellow saints said, "Leave it, let it die. This animal has a wicked nature, it bites its saviours also".

The saint replied very calmly, "If he does not forgot his wicked nature of biting, then how can I leave my nature of saving other". He continued his efforts to save the scorpion.

The virtues of mercy brings many other virtues such as generosity, forgiveness, soft feelings for others and helping nature. The virtue of mercy is like a magnet which pulls many other virtues towards it.

**Moral : Dear Children ! (1) We should always think about the well being of others even if they try to harm us. (2) To favour even these who are ingratitude is a sign of a gentleman.**





## किस के कितने गुण ?



### HOW MANY VIRTUES OF EACH ?

हौशियार बच्चो । आपको जोड़, घटाव, गुणा, भाग तो आता ही होगा । गणित के सवाल तो आपको अच्छे लगते होंगे । यहाँ भी आपको सरल-सरल सवाल दिए जा रहे हैं । आपको करना यूँ है कि नीचे हर पंक्ति में कुछ आंकड़े दिए हैं और कुछ आपको भरने हैं । अंको के बीच अलग-अलग चिह्न हैं । आपको इस तरह अंक भरने हैं कि उत्तर में नवपद के गुण आएँ ।

#### Children :

You have solved many arithmetic problems using addition, subtraction, multiplication and division in your school. Now you have to solve them for religion. Fill in the blanks such that the result equals the virtues of each of the Navpads stated on the right side of 'equal to' sign.

आपको समझ में आए इसलिए उदाहरण भी दिया है । Some of the example is given below.

$$(1) \quad 15 \times 2 \div 3 + 2 = \frac{12}{\text{Arihant / अरिहंत}}$$

$$(2) \quad 35 \div \underline{\hspace{1cm}} \times \underline{\hspace{1cm}} - 13 = \frac{8}{\text{Siddh / सिद्ध}}$$

$$(3) \quad \underline{\hspace{1cm}} \times 9 + \underline{\hspace{1cm}} \div 13 = \frac{36}{\text{Acharya / आचार्य}}$$

$$(4) \quad \underline{\hspace{1cm}} \underline{\hspace{1cm}} - 15 + \underline{\hspace{1cm}} = \frac{38}{\text{Upadhyay / उपाध्याय}}$$

$$(5) \quad 15 \times \underline{\hspace{1cm}} \div \underline{\hspace{1cm}} + 12 = \frac{37}{\text{Sadhu / साधु}}$$

$$(6) \quad \underline{\hspace{1cm}} + 27 - \underline{\hspace{1cm}} + 20 = \frac{67}{\text{Darshan / दर्शन}}$$

$$(7) \quad 81 \div \underline{\hspace{1cm}} \times \underline{\hspace{1cm}} - 12 = \frac{51}{\text{Gayan / ज्ञान}}$$

$$(8) \quad \underline{\hspace{1cm}} + \underline{\hspace{1cm}} - 26 \times \underline{\hspace{1cm}} = \frac{70}{\text{Charitra / चारित्र}}$$

$$(9) \quad \underline{\hspace{1cm}} \times \underline{\hspace{1cm}} + 27 - \underline{\hspace{1cm}} = \frac{60}{\text{Tap / तप}}$$



## लांछन पहचानो



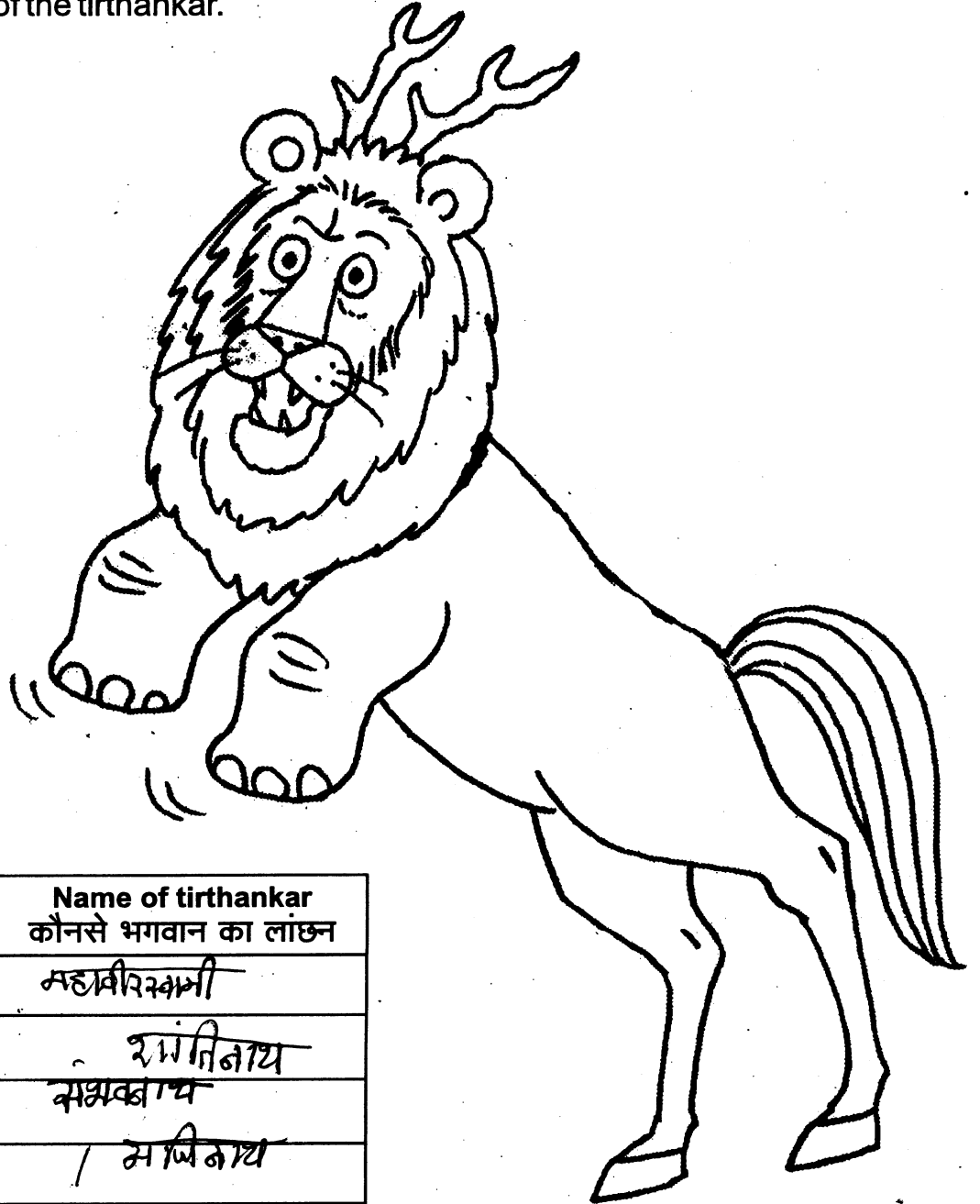
### REMIND LANCHAN (SYMBOL)

प्यारे बच्चे !

आपको सामने एक चित्र रखा हुआ है । उसमे कोनसे चार भगवान का लांछन हुआ है इसलिए कोन से भगवान का और कोनसा लांछन उसे पहचानकर लिखे और बाद में चित्र में रंग भरे ।

Dear Children,

In the picture above there are four hidden symbols of four tirthankars. Find them and write below with the name of the tirthankar.



Sr.No.	Symbol (लांछन)	Name of tirthankar कौनसे भगवान का लांछन
1.	सिंह	महावीरजी
2.	किंवा	शान्तिनाथ
3.	घोड़ा	समभवजी
4.	हाथी	मणिनाथ



## तारणहार श्री नवकार



पोतनपुर नगर में सुव्रत नामक सेठ अपने परिवार के साथ में रहते थे। उनकी श्रीमती नाम की सुपुत्री थी। सेठजी ने श्रीमती को जैन दर्शन का और नवकार मंत्र का तलस्पर्शी अध्ययन पंडितों के पास करवाया था। नवकार को गहराई से समझने के कारण श्रीमती दिन-रात नवकार को ही गिनती थी। वह नवकार मंत्र को सर्व मंगल में श्रेष्ठ मंगल मानती थी।

श्रीमती की धर्म भावना से प्रभावित सेठजी चाहते थे कि उसकी शादी जैन संस्कारों से युक्त परिवार में हो। श्रीमती के लिए बहुत रिश्ते आने लगे परन्तु जैन धर्म के प्रति उन लोगों का झुकाव न होने से सेठजी ने उन रिश्तों को स्वीकार नहीं किया।

पोतनपुर के ही एक अन्य सेठजी के पुत्र ने स्वयं बहुत धर्म करने का नाटक कर श्रीमती के पिताजी को प्रभावित कर श्रीमती से शादी कर ली। वास्तविकता से अपरिचित श्रीमती धर्मी पति के मिलने से प्रसन्न थी।

ससुराल आने के बाद कुछ ही दिनों में उसके पति सहित सभी घरवालों ने अपना रंग बदलना शुरू कर दिया। श्रीमती के धर्म का सभी विरोध करने लगे। सभी श्रीदेवी को धर्म भ्रष्ट करने का उपाय ढूँढने लगे।

श्रीमती तो अपने धर्म में दिनों दिन मजबूत बनती गई और अपने ससुराल वालों को धर्म के महिमा को समझाने के लिए हमेशा प्रयत्न करती गई। परन्तु श्रीमती की दृढ़ता को देखकर घरवालों ने उसके साथ झगड़ना शुरू कर दिया।

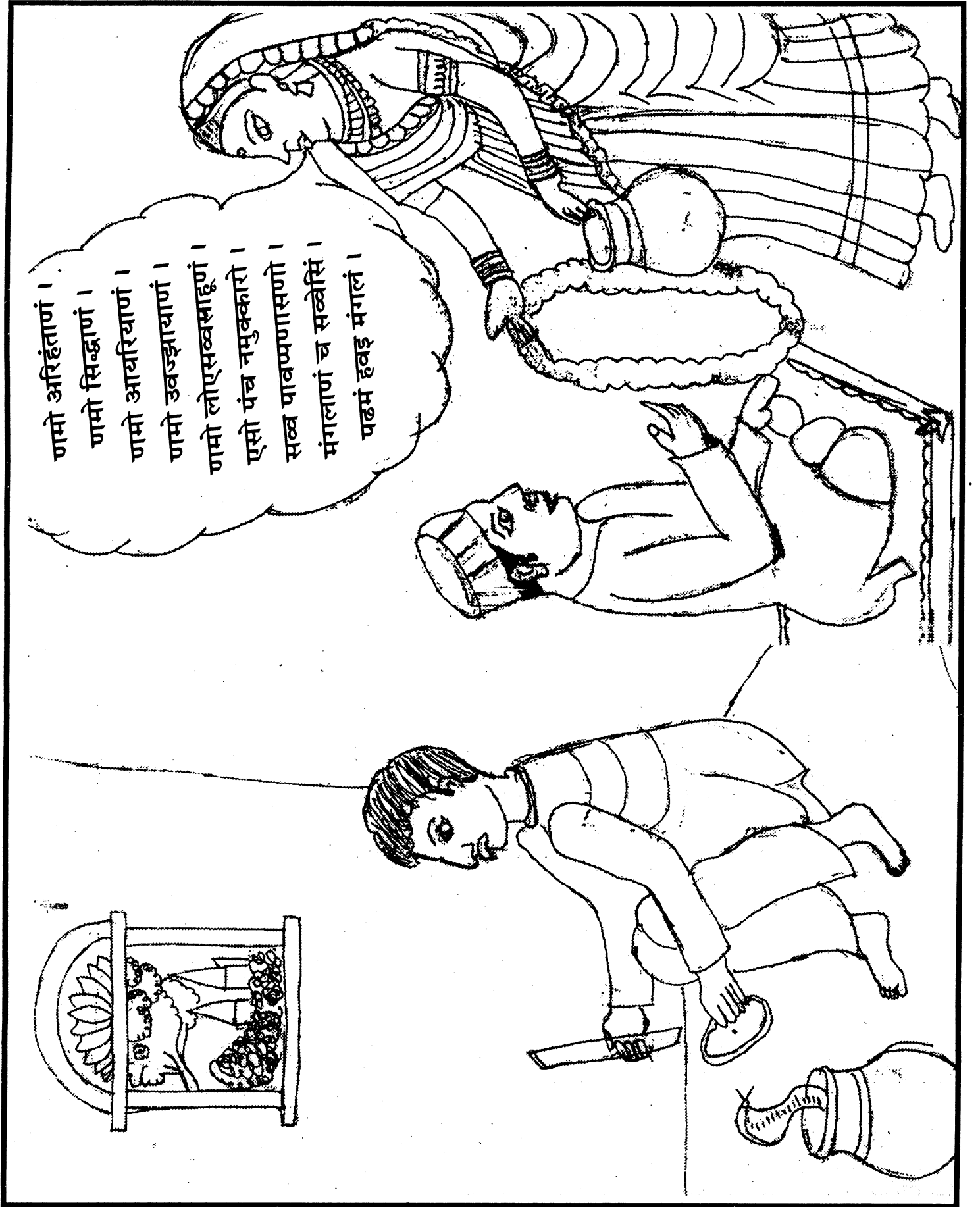
एक दिन श्रीमती के पति ने श्रीमती को घर के कोने में रखे काले घड़े में से फूल लाने को बोला। श्रीमती अपनी आदत अनुसार श्री नवकार मंत्र को बोलती हुई घड़े को खोल के एक थाली में फूलों को रखकर अपने पति के पास आई।

बात यूँ बनी कि श्रीमती के घरवालों ने एक जहरीला साप घड़े में रख दिया था और जानबूझकर श्रीमती को फूल के बहाने से घड़े में हाथ डालने को भेजा था कि जिसके कारण श्रीमती को जहरीला साप डस ले और वह मर जाए। परन्तु श्रीमती के हाथ में फूल देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गए और श्रीमती के पैरों में गिरकर माफी मांगने लगे क्योंकि नवकार मंत्र का साक्षात् चमत्कार साप की जगह फूल के रूप में उनके सामने था।

श्रीमती को समझ में नहीं आया कि रोज मेरे साथ झगड़ने वाले आज अचानक क्यों पैरों में गिरकर माफी मांग रहे हैं। परन्तु जब घरवालों ने हकीकत बताई तो उसे सुन श्रीमती की श्रद्धा श्री नवकार महामंत्र में और बढ़ गई। उस दिन के बाद पूरा परिवार जैन धर्म और नवकार महामंत्र की खूब आराधना करने लगा।

**बोध: प्यारे बच्चों ! आप भी जो नवकार के चमत्कार को प्रत्यक्ष देखना चाहते हो तो आज से ही ज्यादा से ज्यादा नवकार गिनना शुरू कर दें।**





## 5. तारणहार श्री नवकार / Navkar the Saviour

परीषीबेन संजयभाई हिराणी (बोरीवली)



## Navkar the Saviour



‘Suvrat Sheth’ a merchant lived in a town called Potanpur with his family. He had a daughter called ‘Shrimati’. He had appointed Pandits to teach her Navkar in great details. As a result she had full faith in Navkar and she recited it Day & Night. For her, Navkar was the most auspicious amongst all other mantras (spells).

Virtuous and beautiful Shrimati was rational (Samyag darshan) in thoughts. His father thus wished that she gets married into a family which follows Jainism. There were many requests but her father did not accept because they were lacking in good character, knowledge about Jainism and devotion towards religions.

A son of another merchant from the same town disguised as a devotional and religious person cheated Shrimati’s father and married her. Not knowing the fact her father was happy to get such a good person for Shrimati. Even Shrimati was happy to get married in a family which she thought was deeply religious.

As time passed all the family members including Shrimati’s husband started showing true colours and they all turned out to be against religion. They did not like religious activities of Shrimati and tried to reduce her devotion and dedication towards religion.

Shrimati had imbibed the true essence of religion and always tried to explain the glory of Navkar but it turned against her and the family members had quarrels with Shrimati.

One day her husband asked Shrimati to get flower garland from a black earthen pot lying in the corner of a room. Shrimati, while reciting Navkar as usual, reached the pot, opened the lid and brought the fresh and fragrant garland in a plate to her husband.

Actually the family members had put a poisonous snake inside the pot so that it would harm or kill Shrimati as she reaches for the garland. But seeing the flower garland they all were astonished. How is this possible ? How did the snake become a flower garland ? Now they had no choice but to put faith in the glory of Navkar. They fall to her feet and asked for her pardon.

Initially Shrimati did not understand what was happening but when she was told she now had more faith in Navkar because now she had actually experienced the power of Navkar. From that day onwards all the family members turned truly religious and fully devoted to Navkar.

**Moral : Dear Children ! If you want to experience the miracle of Navkar start now and now counting Navkar more and more.**



## मरण का भय



ये अजैन बोधकथा है। इस में एक वृद्ध आदमी मौत मांगता है पर जब मृत्यु आती है तब उस से दूर भागता है।

एक गाँव में एक वृद्ध लकड़हारा रहता था, वो बेहद गरीब था। तूटी - फूटी झोपड़ी में रहता था, उसकी पत्नी भी इस धरती से अलविदा हो चुकी थी। बाल - बच्चे भी नहीं थे। इस वजह से स्वयं मजदूरी करके कमाना पड़ता था। खाना - पीना - बनाना आदि सभी काम स्वयं ही करने पड़ते थे। जीन्दगी से थक चुका था। हर रोज जंगल में जाना, लकड़े काटकर लाना और जीवन चलाना। इस रोज के सिलसिले से वो तंग आ गया था। क्योंकि एक दिन - दो दिन तो ठीक, परन्तु ये तो पुरी जिन्दगी ही करना था। इस तरह के जीवन से तो मरना ही बेहतर है।

एक दिन दोपहर में लकड़ी काटने गया। बहुत मेहनत से लकड़े काटकर भारा बांधा। दोपहर की कड़ी धूप में जंगल से लकड़े का भारा उठकर आ रहा था। एक तरफ सूर्य का ताप तो दुसरी तरफ धरती भी गरम हो रही थी तो स्वाभाविक ही है - प्यास लगना। प्यास, थकान एवं उम्र के कारण मस्तक पर रखा हुआ भार असहनीय लगने लगा। परेशान होकर उसने लकड़े का भारा नीचे पटक दिया और गुस्से में आकर बोला - हे यमराज ! मुज को ले जाओ तो अच्छा हो।

देखा बच्चो ! मजुरी कितनी दुःखदायक चीज है। पुण्य के उदय से आपको सब कुछ आसानी से मिल गया है, इसलिए आप को उस चीजो की कदर नहीं है। किन्तु जिन्हे ये सब कुछ हासिल नहीं हुआ - उनकी क्या हालत है वो - आप देख रहे हो ना।

अजैनो मे एसी मान्यता है की - इन्सान की मृत्यु के समय यमराज उसे लेने आता है। योग - संयोग से उसी समय यमराज वहाँ से गुजर रहा था। वृद्ध के ये शब्द यमराज के कानो मे पड़े। उन्होने सोचा - ये मरने के लिए इतना ही उत्सुक है तो इसे साथ ही यमलोक लेकर जाऊँ। यमराज आकाश मार्ग से नीचे उतरकर उस लकड़हारे के सामने साक्षात आकर खड़े हो गए।

भाई ! मुझे क्यों याद किया। मे यमराज हूँ। क्या जीने से थक गए हो। सभी को जीना पसंद है और आपको मरण पसंद है तो फिर चलो मेरे साथ। यमराज को देखते ही वृद्ध घबरा गया - शरीर पर पसीना बढ़ गया, हाथ-पैर काँपने लगे। फिर बात को पलटकर बोलने लगा - आपने तो सचमुच मेरी विनंती सुन ली। सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं जाती। यमराज जी ! आप भले आए। धूप के कारण मे थक गया था। लकड़ी का वजनदार भारा उठनही रहा था। उसे नीचे रख दिया, अब मे उठकर सिर पर नहीं रख सकता हूँ। आस - पास कोई इन्सान भी दिखाई नहीं दे रहा है। ऐसे में आपका आगमन हुआ है तो थोड़ा कष्ट उठकर ये लकड़िया मेरे सिर पर रख दीजिए। यमराज ने उसका भारा सिर पर रखवाया और मन ही मन हँसते हुए स्वयं के मार्ग पर चला गया। वह वृद्ध भी धीरे धीरे अपने गाँव की ओर चलने लगा। थोड़ी थोड़ी देर में पीछे मुड़कर देखता है - कही यमराज वापस न आ जाए।

**बोध:** प्यारे बच्चो ! इन्सान जीवन में दुःख आने पर मरण को याद करता है, किन्तु जब मरण सामने आकर खड़ा होता है तब मुझे नहीं मरना, नहीं मरना इस तरह बचने की फरियाद करता है। जीवन मे कितना भी दुःख आ जाए तो भी किसी को मरना पसंद नहीं होता है। बच्चो आप भी सुख - दुःख में धर्मा राधना करो। नहीं तो आपको भी बार बार मरण की याद आएगी। आराधना करते हुए मरण आए तब तकलिफ होगी तो भी धर्म ही याद आएगा। इसलिए धर्म करो।



6. मरण का भय / Fear of Death





## Fear of Death



This story is from non Jain texts. The story is about an old man who wishes for death and when he actually sees himself close to death, does not accept it.

Once there was an old man living in a village. He was very poor and staying in a small and broken hut. His wife had expired and he had no siblings. Therefore he himself had to work to earn his living. He had to perform all the daily chores himself and thus he was tired of living this life. Doing all this chores in old age was very difficult for him and he had to do it till he was alive. He wished death than this torturous life.

Once on a sunny day he went to the jungle to get some dry wood. He cut some wood and made a bundle and put on his head and started walking in the direction of his house. It was very hot and the earth was also getting hotter. After a while he felt thirsty. Thirst, tiredness due to heavy load of wood and old age, he could no longer lift the load and threw it on the ground and prayed, "Oh ! Yamraj, take me with you, I do not want to live anymore".

Dear Children, See ! how difficult is life for some people. Imagine the hardships people face. You are so lucky that because of your punya you do not have any such hardships. You get whatever you desire and that is why you do not value them. But observe the condition of those who do not get them.

In other religions it is believed that during the time of death. Yamraj arrives to take the soul of that person. Incidentally, it happened that Yamraj was passing by this old man and he heard the old man's wish to die. Yamraj thought, that why not take this old man with me to Yamlok as he is so eager to die. Yamraj descended from the sky and appeared in front of the old man and said, "I listened to your prayer. Are you tired of living ? Everyone likes to live and you want to die ? Anyway, I will take you to Yamlok, come with me."

The old man was terrified on seeing the Yamraj in front of him. He was already sweating due to the heat but now started sweating more. His limbs started shivering. He completely changed his words and said. "Oh ! Yamrajji, you really listened to my prayer. I have no intention of dying. It is only because of this heavy bundle of wood on my head and no one to help me around, that I threw this bundle and wished to die. Now, if you kindly help me to put this bundle on my head". Yamraj, helped him to put the bundle on the old man's head and left for Yamlok with a smile. The old man slowly started walking towards his house with occasional looks at his back to make sure that the Yamraj has left and not following him.

**Moral : Dear Children ! A human being does not want to die even if he is grief stricken, full of sorrow and facing immense problems. He may simply wish to die but when sees death coming closer he tries to run away from death. However grief stricken a person may be he would never like to die. So dear children from today itself start performing religious & rites if you are sad or happy or else you will face hardships and problems which will remind you of death. By being religious when death approaches we shall remember our religion and forget all the problems & hardships of life. Hence get more active in following religion.**



## संबंधवाले नाम जोड़ो



### Match the related Name

बुद्धिमान बच्चो आपके सामने कई चित्र हैं। कौन - कौन से एक दूसरे की जोड़ के हैं। चित्रों से पहचानिए।

Clever Children there are many picture in front of you. Which are the same. Identify the picture.



(१) सापडो / Sapdo



(१) कटोरी / Bowl



(२) ओघो / Ogho



(२) चेतना / Chetna



(३) थाली / Thali



(३) स्थापनाचार्य / Stapnacharya



(४) धुप / Dhoop



(४) ध्वजा / Flag



(५) तरपणी / Tarpani



(५) मंगलदीवा / Mangaldiva



(६) शिखर / Shikhar



(६) सिंहासन / Throne



(७) ठवणी / Thauni



(७) पुस्तक / Book



(८) आरती / Arti



(८) धुप स्टेन्ड / Dhup Stand



(९) त्रीन गढ / Three gadh



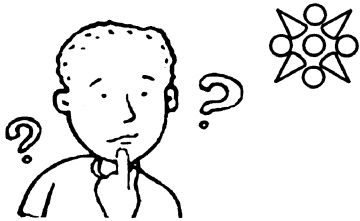
(९) खडीया / Inkpot



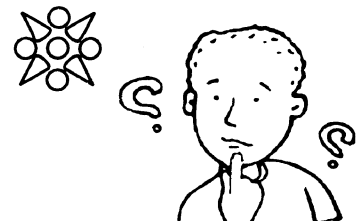
(१०) कलम / Kalam



(१०) मुहपत्ति / Muhpati



## आकाश में कितने तारे ?



अकबर के दरबार में नवरत्न थे उनमें से एक थे बीरबल । बीरबल बेहद चतुर थे । अकबर आए दिन विचित्र प्रश्न पूछा करते और हर बार सही उत्तर देने का यश बीरबल को ही मिलता था ।

एक बार बादशाह ने बीरबल की गैरहाजिरी में दरबारियों से पूछा, “बोलो ! आकाश में कितने तारे हैं ?” पहले तो सबको प्रश्न सरल लगा फिर विचार करने पर कठिन लगने लगा ।

कई दरबारी बीरबल से जलते थे । उन्होंने कहा की हमें तो जवाब नहीं आता पर बीरबल तो बहुत चतुर हैं वो जरूर जवाब देगा । इतने में ही बीरबल ने दरबार में प्रवेश किया ।

बादशाह ने बीरबल से प्रश्न किया और कहा कि दरबारी यह मानते हैं कि बीरबल जरूर जवाब देगा ।

बीरबल दरबारियों की जलन से परिचित था । उसने कहा कि जहांपहा आसान जवाब है । आसमान में नौ करोड़, नौ सो निन्यानवे तारे हैं ।

बादशाह बोले, “तुं कैसे कह सकता है ?” बीरबल बोले, “हजुर । मैं गलत होऊं तो दरबारियों से कहिए कि वे तारे गिन आएँ, मैंने तो गिने हैं ।”

बादशाह बीरबल की चतुराई से प्रसन्न हो गए और दरबारियों के सिर शर्म से नीचे झुक गए ।



## Counting the stars ?



There are many famous tales of Emperor Akbar and Birbal. Emperor Akbar had nine intelligent persons known as nine jewels in his court. Birbal was very intelligent and one of the nine jewels. Also he was very well known personality.

Once just for a gimmick, he asked his courtiers “Tell me, how many stars are there in the sky?”. The courtiers initially thought that the question is simple but as they thought more and more they realized that it is indeed a difficult question to answer.

Many courtiers were jealous of Birbal so they said, “Your Highness, none of us can answer this question only Birbal is clever enough to answer”.

The Emperor look around for Birbal and just then Birbal arrived. He noticed the silence in the court and got a feeling that something must have happened. He bowed to the Emperor and he immediately asked Birbal. “How many stars are there in the sky ? Birbal was aware that other courtiers are jealous of him and so he promptly answered.” Your Highness, its very simple, there are nine hundred crore nine hundred ninety nine stars in the sky.

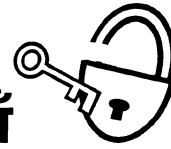
Emperor asked, “Are you sure ?” Birbal replied, “Yes, your Highness, If you do not trust me tell the other courtiers to count them. I have already counted them. Emperor was pleased with the clever reply and the courtiers looked down with shame.



प्यारे बालकों । आप चाहते हैं कि जल्दी-जल्दी याद हो जाए, याद किया हुआ भूले नहीं, ज्ञान बढ़ता रहे तो सबसे पहले ज्ञान की आशातना से बचो । ज्ञान की आशातना से हमें ज्ञान चढ़ता नहीं है, इस भव और पर भव में बोलना नहीं आता, जीभ तुतलाती है, बुरे विचार आते हैं, याद नहीं होता । अगर आपको सच्चा ज्ञान पाने की इच्छा होती है तो नीचे बताई हुई चाबियाँ लगाने से जीवन में ज्ञान का ताला खुल जाएगा ।



## ज्ञान बढ़ने के चाबीयाँ



- (१) ज्ञान के पाँच खमासमणे देने से (२) पाठशाला जाने से (३) ज्ञान की पूजा करने से (४) "ॐ ह्रीं णमो" नाणस्स का जाप करने से (५) ज्ञान पंचमी की आराधना करने से (६) ज्ञानभंडार बनाने से (७) पुस्तकें लिखवाने से (८) गुरु, बड़ो का विनय करने से



## ज्ञान नहीं चढ़ने के कारण



- (१) कुछ भी खाते-पीते समय बोलने से (२) कागज में जीमने से (३) कागज पर थूकने से (४) लिखे हुए कपड़े पहनने से (५) कागज पर बैठने से (६) कागज फाड़ने से (७) कागज जलाने से (८) ज्ञान के साधनों पर पैर लगाने से (९) ज्ञानी का अपमान, अवहेलना करने से (१०) तोतले, हकलाने वाले की हँसी उड़ाने से (११) पढ़ने वाले को रुकावट डालने से (१२) ज्ञान के उपकरण फेंकने से (१३) ज्ञान के उपकरण मुँह में डालने से (१४) ज्ञान के उपकरण पास में रखकर मल-मूत्रादि का त्याग करने से (१५) कागज से हाथ थाली आदि पोंछने से





## Key to knowledge



Children : Do you wish to increase your knowledge and intellect ? If yes, then first of all keep away from disrespecting knowledge. By disrespecting knowledge we loose the capability of gaining knowledge in this incarnation as well as other incarnations. It may also happen that we may not be able to speak properly or become totally dumb if you disrespect knowledge. Following are the keys ot gaining rational (or true) knowledge apply them and unlock the treasure of knowledge.

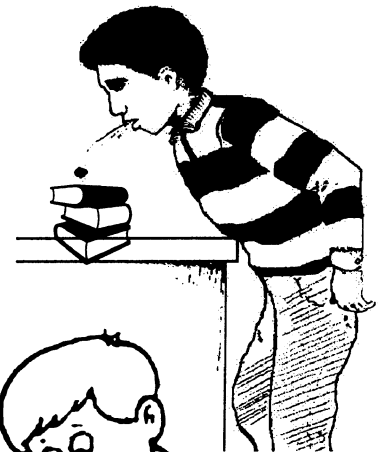
### DO THE FOLLOWING TO GAIN RATIONAL KNOWLEDGE QUICKLY...

- (1) Bow down (Khamasana) to holy book five times.
- (2) Visit Paathshala to learn more.
- (3) Worship knowledge.
- (4) Do Jap of Om hrim namo naanassa
- (5) By doing Gyan Panchami aradhana
- (6) Built treasure box for knowledge.
- (7) Get new books written.
- (8) Respect Guru and elders.



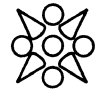
### DO NOT...

- (1) Speak while eating.
- (2) Eat on paper.
- (3) Spit on paper.
- (4) Wear clothes with text printed on them.
- (5) Sit on paper.
- (6) Tear Paper.
- (7) Burn paper.
- (8) Walk on Paper.
- (9) Disrespect or Insult a learned person.
- (10) Tease a peson who stammers or cannot speak properly.
- (11) Block some ones efforts of gaining knowledge or put obstacle for other who are trying to learn.
- (12) Throw stationery items.
- (13) Put stationery items in your mouth.
- (14) Carry stationery items into toilets.
- (15) Put stationery items on the floor.
- (16) Wipe your hands or legs with paper.



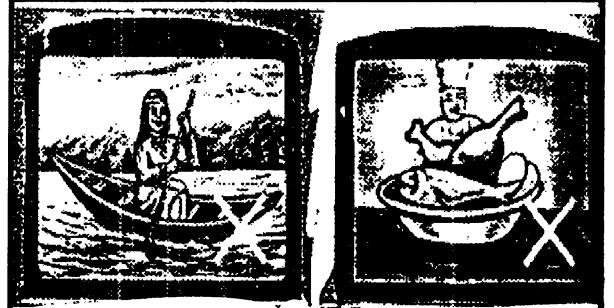


## टेलीविज़न : कितनी समस्याओं का कारण



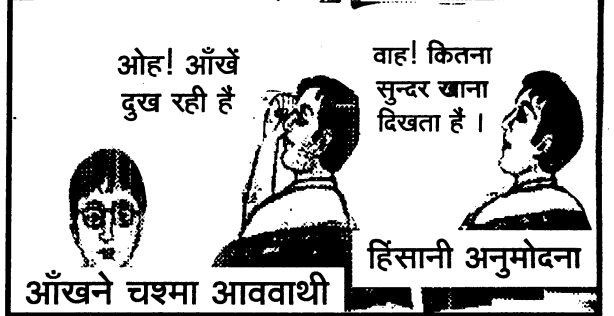
दुलारे बच्चों । आप सबको टीवी देखना बहुत अच्छा लगता है न ? शाला से आते ही आप टीवी के आगे बैठ जाते हैं यहाँ तक कि जीमते भी वहीं हैं । पोगो, छोट भीम जैसे कार्टून सीरियल का एक भी एपिसोड नहीं छोड़ते । टीवी से कई तरह के नुकसान होते हैं, आप भी जानो और टीवी देखना छोड़ने की बहादुरी दिखाओ ।

१. **शारीरिक नुकसान** : टीवी देखने से कम उम्र में आँखों पर चश्मा आ जाता है । टीवी से निकलने वाली किरणों से कैंसर भी हो सकता है ।



२. **समय का नुकसान** : टीवी आपका कीमती समय खा जाता है । टीवी देखने से पढ़ाई का समय व्यर्थ चला जाता है और कई बच्चे पढ़ाई में पिछड़ जाते हैं और फेल हो जाते हैं ।

३. **संस्कारों का नुकसान** : टीवी देखने से हिंसा, झूठ, चोरी के संस्कार आसानी से आ जाते हैं । माता-पिता के सामने बोलना सीख जाते हैं । पूरे साल में १२ से १५ हजार



हिंसा के दृश्य देखने के बाद बच्चे के अचेतन मन पर जो संस्कार पड़ते हैं वो आगे जाकर जागृत हो जाते हैं ।

४. **अनुमोदना का पाप** : टीवी में आने वाले सीरियलों के निर्माण में जो कुछ भी हिंसा होती है, जाने - अनजाने हम भी उसके भागीदार बनते हैं । हिंसक, अश्लील दृश्य देखने से मन बिगड़ता है ।

५. **सामुदायिक कर्म - बंध** : मारधाड़, खून, फांसी आदि दृश्य देखते समय देखनेवाले खुश होकर ताली बजाते हैं, सीटियाँ बजाते हैं, खुश होते हैं, जिससे सामुदायिक कर्म बंध होता है । इसके फलस्वरूप रेलवे, हवाईजहाज, बस एक्सीडेंट, भूकंप, आंधी, तूफान, बाढ़ जैसी आपत्तियों में जीव एक साथ मर जाते हैं ।

और भी कई तरह के नुकसान में जीव से होते हैं । वैसे भी बचपन खेल-कूद और पढ़ाई के लिए होता है ताकि तन-मन का विकास बराबर हो सके । बच्चों अभी टीवी देखने में जो समय बेकार करोगे वो लौटकर आने वाला नहीं है । टीवी देखने के चक्कर में पाठशाला भी छुट जाती है और धार्मिक अभ्यास नहीं हो पाता ।

बच्चों, मैं आत्मा हूँ । मेरे अंदर असीमित खुशीयाँ भरी पड़ी है । टीवी के द्वारा प्राप्त होने वाला भौतिक सुख मुझे कभी भी हमेशा के लिए खुशी नहीं दे सकता है । इस बात को दृढ़ करके हम निर्णय करें कि टीवी से होनेवाली हानियों को ध्यान में रखकर टीवी देखना बंद करेंगे ऐसा हम विश्वास रखते हैं ।



## T.V. a Nuisance



T.V. is one of those gadgets which has created a series of nuisances in today's world. Following are the nuisances caused by T.V.

- (1) **Health hazards** - Watching T.V. results in the use of spectacles and also eye cancer in some cases. The rays falling on the body may lead to cancer.
- (2) **Wastage of Time** - Watching T.V. results in loss of valuable time. It become difficult to pay attention to school and Pathshala studies. One forgets the culture and tradition of respecting his parents and elders. Absence of good religion behaviour the soul is thrown to lower life firms or hell.
- (3) **Loss of Cultural Values** - Cultural values, moral valuer and money is lost in imitating the actors. It spils our thought process and this happens through day and night. This results into quarrels and fights on petty issues.
- (4) **Sin of appreciation** - Non - Vegetarian food such as meat, eggs, fish are provided ot T.V. and film actors. Even thought we do not eat such things we accumulate bad sins because we are indirectly involved in this act of violence.
- (5) **Group Karma - Bandh** - If requires to construct studies for shooting programmes for T.V. and this results in violence against prithvikays. The sins of nature such as river, sea, water falls, swimming pools causes violence againsts life forms of water and vanaspatikay. Electricity required to operate T.V. is generated from water. Various living beings such as fish, crocodiles, loose their lives and we knowingly or unknowingly become responsible for this acts of violence.



The audience watching various violent scenes such as fights, wars, murder enjoy them and many times get and clap or whistle during excited these scenes. They accumulate group sins which they may have to repay by suffering plane accidents, train accidents, earth quake and other calamities causing group deaths.

**Dear Children :** I am a soul, I have infinite happiness within me. No materialistic thing in this world can give me happiness. Materialistic things can not provide happiness. Let us build this trust within us and decide to boycott T.V. forever to save our soul, family and society from a big nuisance.



## छोड़ने जैसी बातें



१. **आईसक्रीम का त्याग :** इसमें ५५% हवा तथा ३५% गंदे पानी को पैसा देते हैं मांसाहारी अंग जैसे पशुओं के नाक, कान, गुदा के भाग जो कत्लखानों की फर्श पर दुर्गन्धयुक्त हालत में पड़े रहते हैं, इनसे आइसक्रीम की अग्री परत बनाई जाती है ताकि मुंह में जाने के साथ चम्मच पर चिपका रहे, पिघले नहीं। साथ ही शक्कर, अण्डे, चर्बी का एसेंस मिलाया जाता है।
२. **जैली का त्याग :** जैली का निर्माण भी जिलेटिन से होता है और जिलेटिन जानवरों की हड्डियों, चर्म, रेशों को उबालकर बनाया जाता है, कुछ कम्पनियां वेजिटेबल गम से जैली बनाती हैं। हमेशा लेबल देखकर खरीदें।
३. **चॉकलेट का त्याग :** चॉकलेट में सामान्यतः जानवरों से प्राप्त तत्वों का सम्मिश्रण होता है जैसे अंडे की जर्दी तथा जिलेटिन आदि। यर्किंग डिलाई फूट कांस, टॉफीज, पिपरमिंट में जिलेटिन होता है। नेस्ले किटकेट काफरेनेट से बनती है। यह रेनेट बछड़ों की अमाशय से मिलने वाले एसिड से बनता है।
४. **वारसेस्टर सॉस :** इसमें एनकोविल नामक छोटी-छोटी मछलियों का चूर्ण मिलाया जाता है।
५. **चीज का त्याग :** यह सामान्यतः दो सप्ताह से कम आयु के बछड़ों के अमाशय से मिलने वाले एसिड से बनाया जाता है। इसका प्रयोग दूधसे चीज बनाने में होता है। इस एसिड के लिए लाखों बछड़ों को मार दिया जाता है।
६. **शैलेक का त्याग :** यह कीड़ों की मृत काया का कलेवर होता है। ३३३ ग्राम शैलेक के निर्माण में लगभग १००००० कीड़ों को मारा जाता है। इसका प्रयोग कैडबरी कम्पनी के जेम्स व नटीज में मुख्यतः से किया जाता है। सामान्य तह यह अन्य उत्पादों में भी होता है।
७. **शैम्पू का त्याग :** कुछ किस्म के शैम्पूओं में अंडे मिलाये जाते हैं। शैम्पू को हानिकारक परीक्षण के लिए खरगोश की आँखों में डाला जाता है जिससे लाखों खरगोश अंधे होकर मर जाते हैं।
८. **च्युइंगम का त्याग :** च्युइंगम में पशुओं से प्राप्त होने वाला ग्लिसरीन, जिलेटिन आदि आवश्यक रूप से मिला होता है। जानकारी करने के लिए इसका लेबल पढ़ सकते हैं। **(साभार - हम कितने शाकाहारी ?)**



## Reason to Quit



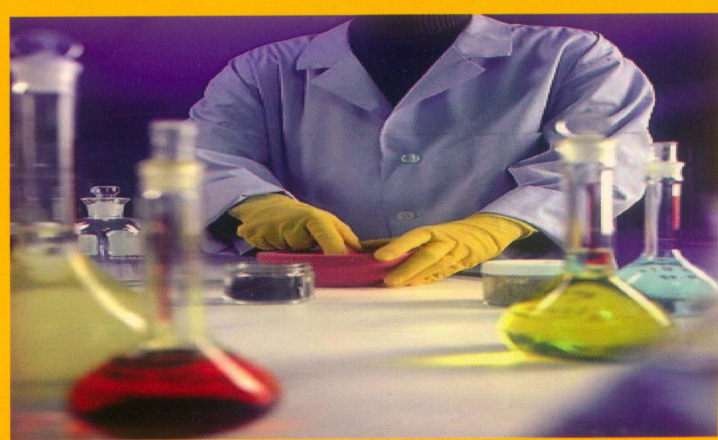
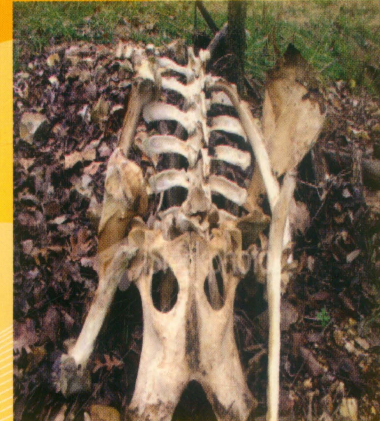
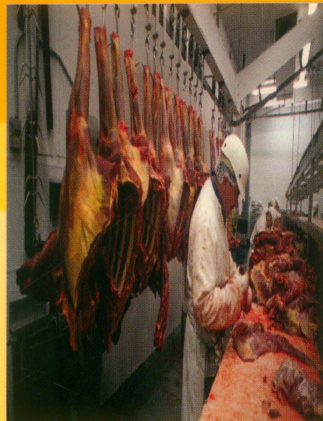
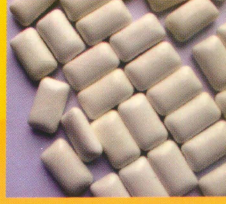
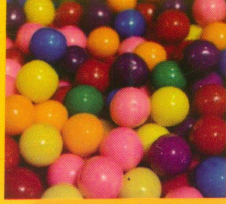
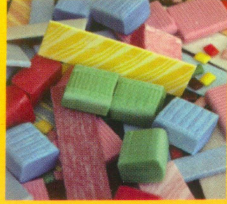
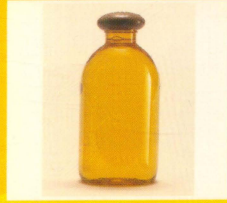
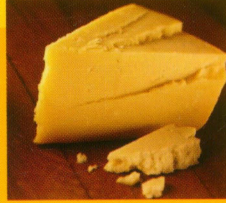
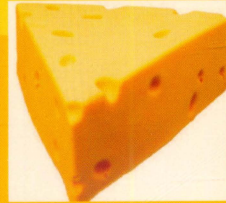
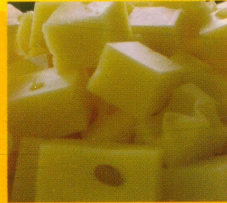
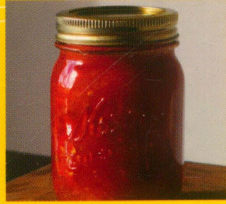
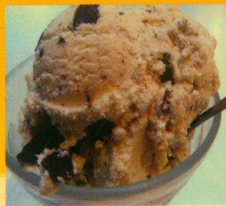
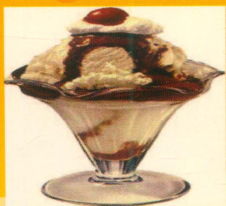
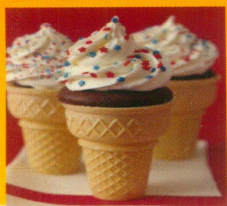
- (1) **Ice Cream :** When we purchase ice cream we are actually paying for 55% air and 35% of dirty water. It also contains not-vet animals part. Such as their ears nose and other internal organs. Which are found on the floor after their slaughter which also smells very bad. this is used on the upper layer of icecream so that it does not melt and stick to the spoon and slides into the mouth. Sugar Egg and milk essence is also added to ice cream.
- (2) **Jelly :** Jelly is made out of Gitetin and Giletin is made of animals bones, skins, are boiled together to make Gilatin. There are few company's of make Gilatin out of vegetable gum. Always see the label before you purchase.
- (3) **Chocolate :** Chocolate is generally made from animal by products like egg, gelatin, e.g. Nestle Kitkat is made from cafrenet and cafrenet is obtained from the organ of "Ranet" a spices of Calf.
- (4) **Worcester Sauce :** It is make of ENKOl salt. Which is made of small fishesh and powder is made out of it.
- (5) **Cheese :** It is obtained from the stomach region of a sucklig mammal, usually a calf or lamb. This is the traditionally way to make cheese. To make cheese lakhs of calf and lambs are killed.
- (6) **Celeriac :** Celeriac is made out of dead body of ants. One lakh ants are killed to obtain 333 grams of celeriac. It is mainly used to make cadburg jems and nutties. It is also used to make other things.
- (7) **Shampoos :** Shampoos are made of eggs. The test of shampoo is done by putting it in to eyes of rabbit. Which inturn makes rabbits blind.
- (8) **Chewing Gum :** Chewing gum is made of glycerin gelatin obtained out of Animal. For more information you can read out on lable of a chewing gum.





## छोड़ने जैसी बातें

## REASON TO QUIT



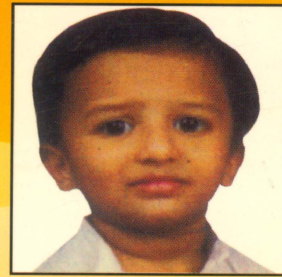




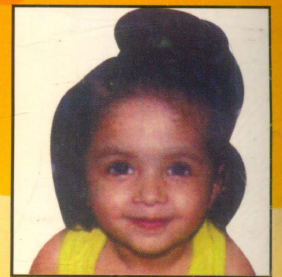
**Karan Nayanbhai Shah**  
(Waslkeshvar)



**Tanish Bhupendrabhai Rathod**  
(Mulund)



**Aagam Vaibhavbhai Desai**  
(Mulund)



**Jinashi Zaveri**  
(Waslkeshvar)



**Shanaya Sohilbhai Shah**  
(Waslkeshvar)



**Mokshvi Rupeshbhai Shah**  
(Waslkeshvar)



**Saloni Pareshbhai Shah**  
(Mulund)



**Ronika Rameshbhai Shah**  
(Mulund)



**Priyanshi Zaveri**  
(Waslkeshvar)



**Manishaben Dineshbhai Shah**  
(Waslkeshvar)



**Pushpaben Nagjibhai Nisar**  
(Dadar)

**Shri Govalia Tank Jain Sangh**  
**Shri Navjivan Jain Sangh**

**Sumanbhai Kanchanbhai Shah**  
(Waslkeshvar)  
**Gyan Sahyogi - By Himanshubhai**  
(Mulund)

**Gyan Sahyogi - By**  
(Waslkeshvar)

प्यारे बच्चो ! इस पुस्तक के अंदर वार्ता, गेम, अमृतवचन,  
आदि आपको भेजना हो तो जलदी से प्रकाशन के कोई भी  
एड्रेस पर भेज सकते हो !

**Printed Mater**

**पूर्णानंद प्रकाशन**

धरणेन्द्रभाइ शाह : ७१२, धरती, इन्द्रप्रस्थ कोम्प्लेक्स, सत्यनगर, बोरिवली ( प. ) मुंबई - १२ मो. ९८९२५ ५१५९०